–वें वर्ष में कलकžा से पहुंचे –¯द पिंÃा

लाडनूं क्क नव बर।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के –वें वर्ष के उपलक्ष में कलकžा से –¯द पिंÃायों सहित ख जनों का संघ लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती पहुंचा। कलकžा से यात्रा लेकर पहुंचे इस संघ ने ॰ दिन तक आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, मु य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा सहित अनेक साधु–साध्वियां आध्यात्म के संदर्भ में चर्चा की एवं प्रवचनों का लाभ लिया। गुरु दर्शन एवं उपासना की भावना जागृत करने में कलकžा में चातुर्मास कर रही आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्या साध्वी कनकश्री का महžवपूर्ण योगदान रहा। कलकžा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचन्द दुगड़, लाभचन्द सुराणा, सभा के मंत्री विमल बैद, महिला मण्डल की सुमन बैद ने उžार हावड़ा में साधु–साध्वियों के चतुर्मास की अर्ज की। उžार हावड़ा सभा के पूर्व अध्यक्ष ने आभार प्रकट किया।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर

विदेशियों की आंखों से छलके हर्ष के आंसू

लाडनूं क्क नव बर।

जैन विश्व भारती परिसर में प्रेक्षा इन्टरनेशनल द्वारा आयोजित त्त्वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग ले रहे विदेशी शिविरार्थियों की आंखों से उस समय खुशी के आंसू छलक पड़े जब राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाने के साथ ही उनकी मन:स्थिति के बारे में जानकारी ली। जैसे ही आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण ने विदेशियों को व्यक्तिश: बातचीत का मौका दिया तो खुशी के मारे उछल पड़े। विदेशियों ने आचार्य महाप्रज्ञ से प्रशिक्षण प्राप्त कर इतने अल्हादित थे और सबके मुंह पर आश्चर्य झलक रहा था। सबका यही कहना था कि आचार्य महाप्रज्ञ –¯ वर्ष की उम्र में भी साहित्य, लेखन, प्रवचन, आगम संपादन कराने के साथ ही सबकी बात भी सुनते हैं। ऐसे गुरु हमें देखने को नहीं मिले।

पिछले सात दिनों से चल रहे इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में आये विदेशी प्रशिक्षुओं के कारण जैन विश्व भारती में चारों तरफ पीले रंग के कवच पहने शिविरार्थी ही नजर आते हैं। अब तक

इन शिविरों के माध्यम से ख देशों के लोग प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं और अपने अपने देशों में प्रेक्षाध्यान के केन्द्र चलाते हैं, जहां हजारों की सं या में लोग प्रेक्षाध्यान से लाभान्वित हो रहे हैं, पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुनि जयंत कुमार ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ की अनुशासना में समणीगण विदेशों में प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत आदि के प्रचार के साथ राष्ट्र की स यक् छवि प्रस्तुत करती है। उन्होंने बताया कि योगा और प्रेक्षाध्यान का आकर्षण विदेशियों को भारत आने के लिए मजबूर कर रहा है।

एक प्रश्न के उŽार में मुनि जयंत कुमार ने कहा कि प्रेक्षाध्यान शिविरों में आने वाले विदेशियों तथा भारतीय लोगों को सा प्रदायिक माहौल में बांधा नहीं जाता है। सभी धर्मों में आस्था रखने वाले लोग आचार्यश्री के पास प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्रेक्षाध्यान सिर्फ जैन धर्म के लोगों या आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अनुयायियों तक ही बंधा नहीं है। आज पूरे विश्व में प्रेक्षाध्यान की चर्चा है। रूस की चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में आचार्य महाप्रज्ञ एवं प्रेक्षाध्यान को प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इन अन्तर्राष्ट्रीय शिविरों में केवल चयनित शिविरार्थी ही भाग ले सकते हैं। जो एक बार यहां आ जाता है वह भारत की अध्यात्म प्रधान संस्कृति से प्रभावित होकर जाता है और बार-बार भारत आने की इच्छा रखता है।